INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 7, July 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

समकालीन भारतीय परिप्रेक्ष्य में मूल्य शिक्षा की प्रासंगिकता और शिक्षक की भूमिका

निकिता मणि त्रिपाठी, शोधछात्रा, महाकौशल विश्वविद्यालय जबलपुर, मध्य प्रदेश

सारांश

समकालीन भारतीय परिप्रेक्ष्य में मूल्य शिक्षा एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। क्योंकि वर्तमान समय में मानव मूल्यों का इतना अधिक ह्रास हो चुका है कि इसे नये स्वरूप में विकसित करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। वर्तमान समय में नवीन तकनीकी, सांस्कृतिक विविधता और वैश्वीकरण के प्रभाव ने मानव मूल्यों को अधिक नुकसान पहुंचाया है। सामाजिक मूल्य, व्यक्तित्व विकास में मददगार होने के साथ–साथ सामाजिक समरसता और नैतिक मूल्यों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में कोविद–19 महामारी ने सामाजिक, भावनात्मक शिक्षा और सहानुभूति के महत्व को स्थापित किया है। जिससे इसकी आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। वर्तमान समय में मूल्य शिक्षा के माध्यम से ही छात्र–छात्राओं में सामाजिक जिम्मेदारी और मानसिक स्वास्थ्य का विकास हो सकता है। मूल्य शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षकों का सहयोग और प्रतिबद्धता अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षकों को नैतिक आदर्श का पालन करते हुए समाज में अपने आप को आदर्श रूप में प्रस्तुत करना चाहिए तथा लोगों में स्वमूल्यांकन और जागरूकता बढ़ाने के प्रयास करने चाहिए। विद्यालय के पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों का समावेश होते हुए भी छात्रों में नैतिक मूल्यों की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है। अतः इस समस्या के सम्बन्ध में अत्यन्त गंभीरता के साथ अध्ययन किया जाना आवश्यक है। ताकि छात्र मूल्य शिक्षा को प्राप्त करते हुए एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में विकसित होने का अवसर प्राप्त हो सके। वर्तमान डिजिटल युग में पारदर्शिता, डिजिटल नैतिकता और समावेशिता पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है। मूल्य शिक्षा में रचनात्मक उपयोग, व्यवहारिक अभ्यास और मूल्य आधारित आकलन को सम्मिलित किया जाना आवश्यक है। जिससे विद्यार्थियों में नैतिक संवेदनशीलता एवं मानवीय मूल्य का विकास होगा। जिससे एक आदर्श भारत का निर्माण सम्भव हो सकेगा। जिसमें सभी नागरिकों में आपसी प्रेम, भाईचारा, सहयोग, सहानुभूति, त्याग एवं परोपकार की भावना विकसित होगी। जिससे यह एक सशक्त समाज का निर्माण होगा और एक राष्ट्र नैतिक रूप से समृद्ध होगा।

मुख्य शब्द– समकालीन परिप्रेक्ष्य, मूल्य शिक्षा, नैतिक मूल्य, शिक्षकों की भूमिका

1. प्रस्तावना

वर्तमान समय में विभिन्न सामाजिक और आर्थिक कारकों के प्रभाव से मानवीय मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है, जिससे मानव का सम्पूर्ण विकास प्रभावित होता है। आर्थिक लाभ और तकनीकी प्रगति के बीच नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टिकोण का अनुत्तरदाई रह जाना चिंता का विषय है। ऐसे में शिक्षा के क्षेत्र में मूल्य सिद्धांतों का समावेश न केवल बच्चों के नैतिक विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि समाज में समरसता, ईमानदारी, जिम्मेदारी और परस्पर सम्मान जैसी सार्वभौमिक मान्यताओं का निर्माण भी करता है। जिसके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि एक शिक्षक न केवल

ज्ञान का प्रसार करें, बल्कि शिक्षा के प्रति जागरुक एवं प्रतिबद्ध रहे। समकालीन शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में समाज की विविधता, वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण और आपदाकालीन परिस्थितियों ने नई चुनौतियां एवं अवसरों को जन्म दिया है। जिनका सामना करने के लिए मूल्य शिक्षा की अनिवार्यता बढ़ गई है। इसी क्रम में शिक्षकों का व्यक्तित्व निर्माण, शिक्षण पद्धतियों का नवाचार और शैक्षिक पाठ्यक्रम का पुनर्निर्माण आवश्यक हो जाता है। क्योंकि मूल्य शिक्षा न केवल नैतिक मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन करती है, बल्कि यह सामाजिक सुव्यवस्था एवं सकारात्मक सांस्कृतिक सहयोग का आधार है। छात्र–छात्राओं में मूल्य शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए वातावरण निर्माण, शिक्षक का नेतृत्व, निरन्तर प्रशिक्षण एवं अन्य आवश्यक पहलुओं पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि समाज एवं विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व का विकास सुनिश्चित करने हेतु जागरूकता और प्रतिबद्धता अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए शिक्षण संस्थान तथा शिक्षक दोनों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है।

2. सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण

किसी भी शोध अध्ययन में सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करना अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। इसके माध्यम से शोधकर्ता अपने शोध विषय से सम्बन्धित पूर्ववर्ती अध्ययनों, अवधारणाओं, सिद्धांतों तथा निष्कर्षों का विश्लेषण करता है। जिसके माध्यम से वर्तमान अध्ययन की पृष्ठभूमि स्पष्ट होती है, तथा शोध अन्तराल की पहचान होती है। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ही वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता और औचित्य सिद्ध होता है। समकालीन भारतीय परिप्रेक्ष्य में मूल्य शिक्षा की प्रासंगिकता और शिक्षकों की भूमिका विषय पर भारत तथा विदेशों में अनेक विद्वानों के द्वारा विभिन्न दृष्टिकोण के आधार पर अध्ययन किया गया है। जिनमें से कुछ प्रमुख निम्न है–

महात्मा गांधी (1937) ने नई तालीम की अवधारणा में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्र–छात्राओं में चरित्र निर्माण, नैतिक विकास एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को स्वीकार किया है। उनके अनुसार शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का साधन ही नहीं है, बल्कि व्यक्ति में सत्य, अहिंसा, सहयोग और सेवा जैसे मूल्यों का विकास करने का माध्यम है। गांधी जी का मानना था कि मूल्य शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के समग्र विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1948-49) विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने शिक्षा को नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के विकास का माध्यम स्वीकार किया है। इस आयोग का सुझाव था कि उच्च शिक्षा संस्थानों में नैतिक शिक्षा एवं चरित्र निर्माण को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए, और इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि मूल्य शिक्षा के बिना शिक्षा अधूरी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने मूल्य शिक्षा को शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग माना है। इसमें राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सद्भाव, पर्यावरण संरक्षण एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण जैसे मूल्यों को बढ़ावा देने की अनुशंसा की गई है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति छात्र–छात्राओं में मूल्यों को विकसित करने की दिशा में प्रयत्नशील रहा है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005) के अनुसार मूल्य शिक्षा को अलग विषय के रूप में न पढ़कर सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया में समाहित किया जाना चाहिए। इसके अन्तर्गत गतिविधि आधारित शिक्षण, अनुभवात्मक अधिगम, सहयोगात्मक अधिगम एवं शिक्षक के व्यवहार द्वारा मूल्य विकास आदि का प्रयास किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भारतीय ज्ञान परम्परा, नैतिकता, सहानुभूति, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व वैश्विक नागरिकता एवं 21वीं सदी में कौशल विकास पर विशेष बल दिया गया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के द्वारा आधुनिक शिक्षा में मूल्य शिक्षा को पुनः केंद्रीय स्थान प्रदान किया गया।

शर्मा (2015) ने अपने अध्ययनों में यह पाया कि विद्यालयों में मूल्य शिक्षा का प्रभाव मुख्यतया शिक्षक के व्यक्तित्व, शिक्षण शैली और विद्यालय वातावरण पर निर्भर करता है। अर्थात दूसरे शब्दों में प्रभावी मूल्य शिक्षा के लिए शिक्षक का व्यवहार सबसे अधिक महत्वपूर्ण घटक है।

सिंह एवं वर्मा (2017) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि जिन विद्यालयों में शिक्षक लोकतांत्रिक एवं सहभागिता पूर्ण व्यवहार करते हैं। वहां विद्यार्थियों में सहयोग, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे सामाजिक मूल्यों का विकास होता है।

वर्मा एवं शर्मा (2021) ने अपने अध्ययन में डिजिटल शिक्षा के युग में शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने तक की सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वह मार्गदर्शक, पथप्रदर्शक, परामर्शदाता, मित्र एवं नैतिक नेतृत्वकर्ता के रूप में विद्यार्थियों का निरन्तर सहयोग करता है।

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण से यह स्पष्ट है कि मूल्य शिक्षा भारतीय शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मूल्य आधारित शिक्षा को पुनः प्रमुख स्थान प्रदान किया गया है। अधिकांश अध्ययनों में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शिक्षक का व्यक्तित्व, आचरण एवं शिक्षण शैली, छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व में मूल्य के विकास को सबसे अधिक प्रभावित करता है। वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव ने मूल्य शिक्षा के आवश्यकता को और अधिक प्रासंगिक बना दिया है। समकालीन भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक एवं डिजिटल सन्दर्भ में मूल्य शिक्षा की बदलती प्रासंगिकता तथा शिक्षक की बहुआयामी भूमिका का समग्र विश्लेषण किया गया है। इसके आधार पर यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता एवं शिक्षक की भूमिका का समकालीन सन्दर्भ में महत्वपूर्ण स्थान है।

3. शोध अध्ययन के उद्देश्य

- समकालीन भारतीय समाज में मूल्य शिक्षा की अवधारणा का अध्ययन करना।
- भारत में मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में समकालीन शैक्षिक–सामाजिक व्यवस्थाओं का अध्ययन करना।
- भारतीय शिक्षा व्यवस्था में मूल्य शिक्षा के स्वरूप का विश्लेषण करना।
- मूल्य शिक्षा के विकास में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करना।

- वर्तमान सन्दर्भ में मूल्य शिक्षा के समस्त उपस्थित चुनौतियों का अध्ययन करना।
- भारत में मूल्य शिक्षा को प्रभावी बनाने की रणनीतियों का अध्ययन करना।

4. शोध विधि तथा प्रविधि

किसी भी शोध अध्ययन में शोध विधि तथा प्रविधि अध्ययन की वैज्ञानिक और व्यवस्थित रूपरेखा प्रस्तुत करती है। इसके द्वारा शोधकर्ता यह निर्धारित करता है कि अध्ययन का स्वरूप क्या होगा, तथ्यों का संकलन किस प्रकार किया जाएगा, उसका विश्लेषण किस विधि से किया जाएगा तथा निष्कर्ष तक पहुंचाने के लिए कौन से टूल तकनीक का उपयोग किया जाएगा। वर्तमान शोध की प्रवृत्ति वर्णनात्मक है। अतः इसमें वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। यह शोध अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। द्वितीय स्रोतों के अंतर्गत विभिन्न पुस्तकों, शोधपत्रों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा 2005, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विभिन्न शिक्षा आयोग की रिपोर्ट, शिक्षा मंत्रालय के प्रकाशन, सरकारी वेबसाइट एवं अन्य डेटाबेस का प्रयोग किया गया है। जिसके अंतर्गत वर्तमान अध्ययन में मूल्य शिक्षा की वर्तमान स्थिति, भारतीय शिक्षा व्यवस्था में उसकी आवश्यकता तथा शिक्षक की भूमिका का विश्लेषण उपलब्ध साहित्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों, विभिन्न आयोगों एवं समितियां के रिपोर्ट तथा शोध अध्ययनों के आधार पर किया गया है।

5. भारतीय सन्दर्भ में मूल्य शिक्षा की अवधारणा

मूल्य शिक्षा की अवधारणा विभिन्न परिप्रेक्ष्य पर निर्भर करती है। इसे व्यक्तियों के आचार–व्यवहार, सिद्धांत और नैतिक मान्यताओं का सम्यक संयोजन माना जाता है, जो सामाजिक स्थिरता और व्यक्तित्व विकास में सहायक होता है। मूल्य शिक्षा का उद्देश्य नैतिक आदर्शों का विकास करना और उन्हें व्यवहार में लाना होता है। यह शिक्षा प्रणाली छात्र छात्राओं में सहिष्णुता, दया, सम्मान, ईमानदारी, जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता को विकसित करने पर बल देती है। मूल्य शिक्षा नैतिक शिक्षा और गणना आधारित शिक्षा दोनों का संयोजन होती है। नैतिक शिक्षा में नैतिक गुणों का अनुकरण और आत्मसंवेदनशीलता पर बल दिया जाता है। जबकि गणना आधारित शिक्षा छात्र छात्राओं के व्यक्तित्व विकास और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देती है। इन दोनों का समन्वय शिक्षकों और विद्यार्थियों में नैतिकता को विकसित होने का अवसर प्रदान करता है, और उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनता है। इस प्रकार मूल्य शिक्षा मानव मूल्यों के संरक्षण और छात्र छात्राओं के समग्र विकास को सुनिश्चित करती है।

भारतीय सन्दर्भ में मानव जीवन में मूल्य एवं नैतिकता की स्थापना में नैतिक शिक्षा और गणना आधारित शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। नैतिक शिक्षा का उद्देश्य छात्र–छात्राओं में सदाचार, सहिष्णुता, ईमानदारी और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना है। यह पारम्परिक शिक्षण प्रणाली का एक अंग है। जहां नैतिक आचार–व्यवहार सिखाया जाता है। गणना आधारित शिक्षा तर्क, विश्लेषण और निर्णय क्षमता पर केंद्रित होती है। यह विद्यार्थियों को विभिन्न समस्याओं का वैज्ञानिक समाधान खोजने में मदद करती है। इन दृष्टिकोण का संयोजन आदर्श आचरण और नैतिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देता है। यह न केवल विद्यार्थियों के निर्णय क्षमता की गुणवत्ता में सुधार करता है, बल्कि उनके नैतिक मान्यताओं को पोषित करता है। विद्यालय में शिक्षकों की जिम्मेदारी इन दोनों का समन्वय

करके और नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में अपना कर एक आदर्श स्वरूप प्रस्तुत करना है। जिससे छात्र–छात्राएं उसको अपने जीवन में आत्मसात कर सकें। इस प्रकार इन शिक्षण पद्धतियों का संयोजन विद्यार्थियों में नैतिक चेतना और तार्किक क्षमता का विकास करता है जिससे सामाजिक संरचना सुदृढ़ होती है। यह विद्यार्थियों में नैतिकता और तर्क का समागम करके सतत विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

6. भारत में मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में समकालीन शैक्षिक–सामाजिक व्यवस्थाएं

समकालीन शैक्षिक–सामाजिक सन्दर्भ में मूल्य शिक्षा की प्रासंगिकता अनेक नवीनतम परिदृश्य और चुनौतियां से घिरी हुई है। वर्तमान समय में समाजिक विविधता व्यापक पैमाने पर पायी जाती है। जहां सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं लैंगिक विविधताएं शिक्षण प्रक्रिया में समग्रता एवं सहभागिता को प्रभावित करती हैं। ऐसे वातावरण में मानवीय मूल्यों का अध्ययन एवं पालन करना न केवल व्यक्तित्व विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि मानव समाज में समरसता एवं सहयोग को विकसित करने के लिए भी अत्यन्त आवश्यक है। वर्तमान डिजिटल युग में तकनीकी प्रगति ने शिक्षण के क्षेत्र को काफी विस्तृत बना दिया है। जिसके परिणाम स्वरूप छात्र–छात्राओं में मूल्य निर्माण वैश्विक स्तर पर होने लगा है। डिजिटल संसाधनों इंटरनेट और सोशल मीडिया के प्रभाव से व्यक्ति के नैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण एवं व्यवहार को प्रभावित करते हैं। यद्यपि इन संसाधनों का सीमित नियंत्रण एवं नकारात्मक प्रभाव चिन्ता का विषय है। जिसके कारण सामाजिक सजगता अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। कोविद–19 जैसी महामारियों ने महामारी परिदृश्य में मानसिक एवं सामाजिक विकास के नये आयाम को रेखांकित किया है। इस दौरान सामाजिक भावनात्मक शिक्षा की आवश्यकता और इसकी अनिवार्यता स्पष्ट रूप से उजागर हुई है। अतः विद्यार्थियों में सहानुभूति, सामाजिक जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व की भावनाओं आदि का विकास अत्यन्त आवश्यक है। छात्र–छात्राओं में यह गुण विकसित करने में शिक्षकों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। साथ ही साथ शैक्षिक पाठ्यक्रम में मूल्य आधारित शिक्षा का समन्वय करके विद्यार्थियों में आत्मसंयम, सहयोग, परोपकार एवं पर्यावरण चेतना को विकसित किया जा सकता है। इसके लिए रचनात्मक शिक्षण रणनीतियों एवं सहायक संसाधनों का प्रयोग किया जा सकता है। जिससे मूल्य शिक्षा, शिक्षण प्रक्रिया का मजबूत आधार बन सके। संक्षेप में समकालीन शैक्षिक सामाजिक संदर्भ में मूल्य शिक्षा को न केवल प्रासंगिक बनाते हैं। बल्कि उसकी श्रृंखला को समृद्ध एवं प्रभावशाली बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। जिसके माध्यम से सभी विद्यार्थियों में मूल्य आधारित सामाजिक गुणों को विकसित करने में सहायता प्राप्त होगी। समकालीन शैक्षिक सामाजिक व्यवस्थाओं का अध्ययन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है–

(i) सांस्कृतिक विविधता एवं सहभागिता

सांस्कृतिक विविधता एवं सहभागिता समकालीन शैक्षिक प्रणाली का अभिन्न अंग है। विद्यालय में विभिन्न पृष्ठभूमि और विभिन्न जाति–धर्म के विद्यार्थी एक साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं। इसलिए मूल्य शिक्षा का उद्देश्य इन विविधताओं को समन्वित और समावेशी बनाना है। जिससे सामाजिक समरसता एवं सामाजिक सौहार्द का विकास किया जा सके। सांस्कृतिक विविधता की स्वीकृति विद्यार्थियों में सहिष्णुता और विविधता में एकता की भावना विकसित करती है। सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। जो अपने प्रभावी शिक्षण एवं संवाद शैली के माध्यम से

विभिन्न संस्कृतियों के बीच समन्वय स्थापित करने का कार्य करता है, तथा विद्यार्थियों को वैश्विक दृष्टिकोण प्रदान करने के साथ ही साथ स्थानीय मूल्य को विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। छात्र–छात्राएं अपने कक्षा में परिचर्चा, समूह कार्य और प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण के माध्यम से संवाद करते हैं और एक दूसरे के गतिविधियों का सम्मान करते हैं। जिसके द्वारा सहभागिता और सामाजिक सम्बन्धों को मजबूती प्राप्त होती है तथा सहानुभूति एवं न्याय की भावना विकसित होती है। कक्षा शिक्षण में शिक्षक विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील रहकर समझदारी के साथ सभी के लिए सम्मानपूर्ण वातावरण निर्मित करता है। जिससे सामाजिक विविधता को शिक्षा में एक अवसर के रूप में देखा जाता है। जिससे विद्यार्थियों में समानता और भाई–चारे की भावना विकसित होती है।

(ii) डिजिटल युग और मूल्य निर्माण

वर्तमान डिजिटल युग की नवीन संचार प्रणाली ने नई पीढ़ी के ज्ञान और सम्पर्क में अभूतपूर्व वृद्धि किया है, जिससे मूल्य निर्माण प्रक्रिया प्रभावित हुई है। डिजिटल संसाधनों और सोशल मीडिया ने युवाओं के अनुभव और सोच को वैश्विक बनाया है। उनके नैतिक निर्णय और सामाजिक जिम्मेदारी को प्रभावित किया है। इस सन्दर्भ में मूल्य शिक्षा के समकालीन आयामों को समझना अत्यन्त आवश्यक है। डिजिटल संसाधन नैतिक सन्दर्भों और मानवीय मूल्यों को प्रभावित करते हैं। जिससे विभिन्न अवसरों के साथ–साथ अनेक चुनौतियां भी उत्पन्न हुई हैं। सोशल मीडिया पर संवाद और विचारधाराएं युवाओं के नैतिक विचार विमर्श और सामाजिक जागरूकता को आकार प्रदान करती हैं। इस सम्बन्ध में शिक्षकों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षक पारम्परिक मूल्यों के संरक्षण के साथ–साथ डिजिटल नैतिकता और विवेक को संचारित करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि मूल्य शिक्षा इस डिजिटल युग में प्रामाणिक रूप से समाविष्ट हो सके। जिसके लिए विद्यालय पाठ्यक्रम में डिजिटल जीवन के नैतिक आयाम का समावेश किया गया है। ताकि छात्र–छात्राएं नैतिकता और मानवीय मूल्यों के अनुरूप डिजिटल उपकरणों का प्रयोग करके मूल्य शिक्षा को विकसित कर सकें। शिक्षकों के अद्यतन प्रशिक्षण से विद्यार्थियों में नैतिकता की भावना को प्रभावी रूप से विकसित किया जा सकता है।

(iii) महामारी परिदृश्य और सामाजिक–भावनात्मक शिक्षा

भारत में महामारी परिदृश्य ने सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा के महत्व को स्पष्ट किया है। कॉविड–19 जैसी वैश्विक महामारी में विशेष कर उसे समय में जब मानवीय सम्बन्धों और समुदाय की स्थिरता की आवश्यकता अत्यन्त बढ़ जाती है। कोविद–19 महामारी ने सीखने और शिक्षण के परम्परागत तकनीकी में अभूतपूर्व परिवर्तन किया है। जिससे सामाजिक भावनात्मक क्षमताओं का विकास तीव्र गति से हो रहा है। इस परिस्थिति में सामाजिक भावनात्मक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों में सहानुभूति, आत्मसंयम, सामाजिक जिम्मेदारी और अभिव्यक्ति के कौशल को विकसित करना है। जो उन्हें व्यक्तिगत और सामूहिक समस्याओं का सामना करने में सक्षम बनाता है। सामाजिक भावनात्मक शिक्षा न केवल छात्र छात्राओं के आन्तरिक विकास को प्रभावित करती है बल्कि उसके सामाजिक सम्बन्धों को मजबूत बनाती है। जिससे विभिन्न समुदायों में समानता और समन्वय की भावना में वृद्धि होती है। विद्यार्थियों में सामाजिक भावना विकसित करने में शिक्षकों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षक अपने शिक्षण पद्धतियों में लचीलेपन के माध्यम से

छात्र–छात्राओं के सामाजिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य को विकसित करते हैं। शिक्षक अपने शिक्षण में सहानुभूति और संवेदनशीलता का समावेश कर सामाजिक भावनात्मक कौशल के विकास हेतु उपयुक्त वातावरण निर्मित करते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षकों का व्यावसायिक अनुभव छात्र–छात्राओं में सामाजिक एवं भावनात्मक एकता की स्थापना तथा सामाजिक संस्था और मानवीय मूल्य की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

7. भारत में मूल्य शिक्षा की प्रभावी रणनीतियां

मूल्य शिक्षा से सम्बन्धित प्रभावी व्यावहारिक नीतियां शिक्षा में नैतिक एवं व्यक्तित्व विकास के लिए आधार प्रदान करती हैं। इनका उद्देश्य छात्र–छात्राओं में सदाचार, सत्यनिष्ठा, सहिष्णुता और सम्मान का भाव विकसित करना है। मूल्य शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षक आदर्श मूल्यों, आदर्श मार्गदर्शन और अनुशासन का पालन करता है, जिससे विद्यार्थियों में स्व–अनुशासन और उत्कृष्टता का विकास होता है। इस सम्बन्ध में नीतियों का निर्धारण, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, सामाजिक सन्दर्भ और समकालीन चुनौतियों को ध्यान में रखकर किया जाता है। इन नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन विद्यार्थियों की नैतिक चेतना को विकसित करने में सहायक होता है। एक शिक्षक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करते हुए विद्यार्थियों में मूल्य आधारित व्यवहार और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को विकसित करने में सहायक होते हैं। मूल्य शिक्षा के सिद्धांतों को पाठ्यक्रम में अभिव्यक्त करना और उन्हें निरन्तर मूल्यांकन करना अत्यन्त आवश्यक है। मूल्य के विकास में संवाद, नैतिक आदान–प्रदान और अनुशासन मुख्य स्तम्भ होते हैं। शिक्षकों को अपने व्यक्तित्व विकास में सक्रिय रहकर नवीनतम शिक्षण विधियों का अर्जन करता है। इसके प्रभावी क्रियान्वयन के द्वारा स्कूल और समुदाय की सहभागिता को सम्भव बनाया जा सकता है, और इस प्रकार समाज एवं राष्ट्र में सकारात्मक बदलाव और नैतिक मूल्यों का संरक्षण होता है।

मूल्य शिक्षा को प्रभावी बनाने में शिक्षकों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है प्रभावी शिक्षण के लिए विद्यालय पाठ्यक्रम का सुव्यस्थित संयोजन होना चाहिए। जिसमें मूल्यों को विषय से जुड़े विभिन्न घटनाओं के रूप में शामिल किया जाना चाहिए। ताकि विद्यार्थियों में नैतिकता और सामाजिकता का विकास हो सके। कक्षा शिक्षण में रचनात्मक गतिविधियों का संचालन समूह चर्चा, केस स्टडी, सामाजिक परिचर्चा और विद्यार्थियों के विचारों को प्रोत्साहित करके एवं मूल्य आधारित निर्णय क्षमता को सशक्त बनाकर छात्र–छात्राओं में मूल्य शिक्षा विकसित की जा सकती है। इसके अतिरिक्त मूल्य आकलन हेतु विभिन्न मानदण्डों का विकास किया जाना चाहिए। जिससे विद्यार्थियों के नैतिक विकास का सतत और सटीक आकलन सम्भव हो सके। इस सम्बन्ध में शिक्षक अपने शिक्षक कौशलों तथा आदर्श व्यक्तित्व और प्रभावी संवाद शैली के माध्यम से छात्र–छात्राओं के व्यवहार में परिवर्तन कर सकता है। शिक्षक विद्यार्थियों में नेतृत्व की क्षमता सहयोग की भावना परोपकार आदि मूल्य को विकसित कर सकता है। साथ ही मूल्य शिक्षण में शिक्षकों का सतत नवीनता और रचनात्मकता के साथ अध्यापन कार्य भी विद्यार्थियों में मूल्य आधारित गुणों को विकसित करने में सहायक है। संक्षेप में विद्यार्थियों में मूल्य के विकास के लिए शिक्षकों की प्रभावी रणनीतियां और प्रतिबद्धता अत्यन्त आवश्यक है। जिससे विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों को विकसित किया जा सके। संक्षेप में मूल्य शिक्षा की प्रभावी रणनीतियां निम्नलिखित हैं–

(i) आदर्श पाठ्यक्रम संयोजन और पूर्व योजना– छात्र–छात्राओं में सामाजिक मूल्यों को विकसित करने के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि पाठ्यक्रम संयोजन प्रभावी ढंग से किया जाए। क्योंकि पाठ्यक्रम संयोजन मूल्य शिक्षा के प्रभावी परावर्तन के लिए आधार प्रदान करती है। जिसमें विषय वस्तु, शिक्षण विधियां और मूल्य आधारित मूल्यांकन सम्मिलित होते हैं। इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास को विकसित करने में सहायता प्राप्त होती है। इस सम्बन्ध में शिक्षकों को पाठ्यक्रम की गहरी समझ विकसित करनी चाहिए तथा पूर्व नियोजित नीतियों और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप अपने शिक्षण पद्धति में समायोजन करके नैतिक और सामाजिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है। इस प्रकार विद्यार्थियों में नैतिक जागरूकता और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास होगा तथा तथा विभिन्न शिक्षण गतिविधियों के माध्यम से छात्र–छात्राओं में आलोचनात्मक सोच और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित होगी। इस सन्दर्भ में मूल्य शिक्षा का निरन्तर मूल्यांकन और पुनः समायोजन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को नियमित परीक्षण और समीक्षा करते रहना चाहिए, जिससे छात्र–छात्राओं पर अनुकूल प्रभाव पड़ सके तथा नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके। जिससे छात्र–छात्राएं समाज के जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

(ii) रचनात्मक शिक्षण और आकलन – शिक्षक अपने विद्यालय में रचनात्मक शिक्षण एवं आकलन के द्वारा विद्यार्थियों में नैतिक एवं सामाजिक मूल्य विकसित कर सकता है। जिसके लिए शिक्षक को विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों जैसे स्व अनुभव, समूह चर्चा, नाट्य प्रदर्शन आदि का आयोजन करना चाहिए। यह गतिविधियां छात्र–छात्राओं को नैतिक निर्णय लेने के लिए प्रेरित करते है तथा सामाजिक सहयोग और सौहार्द को बढ़ावा देते हैं। मूल्य आकलन में विद्यार्थियों की कार्यप्रणाली का विश्लेषण किया जाता है। जिससे शिक्षक उनके व्यवहार विचार और निर्णय का अवलोकन करते हैं। छात्र–छात्राओं के विभिन्न विशेषताओं जैसे सहानुभूति, ईमानदारी आदि का परीक्षण गतिविधियों और प्रोजेक्ट के माध्यम से किया जा सकता है। उच्च गुणवत्ता वाला मूल्यांकन विद्यार्थियों की प्रगति का सही आकलन करता है तथा नियमित रचनात्मक अभ्यास विद्यार्थियों में स्थिरता और आत्म मूल्यांकन की क्षमता का विकास करता है। शिक्षक नवाचारी दृष्टिकोण का उपयोग छात्र–छात्राओं के विभिन्न शिक्षण गतिविधियों के आकलन के लिए करता है। जिससे विद्यार्थियों में नैतिकता, आत्मविश्वास और नेतृत्व कौशल का विकास होता है।

(iii) नवीन आकलन मानदण्डों का विकास– छात्र–छात्राओं के द्वारा सीखे गये ज्ञान और कौशल के मूल्यांकन के लिए अपने गये मानदण्ड और अनुसंधान अवधारणा मूल्य शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन को प्रभावित करती है। आकलन का उद्देश्य शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से छात्र छात्राओं के आचरण में हुए परिवर्तन की माप करना होता है। जिसके द्वारा शिक्षण की प्रभावशीलता का आकलन किया जा सके। परिणाम आधारित मूल्य आकलन में छात्रों के नैतिक और सामाजिक व्यवहार मूल्य आधारित निर्णय लेने की क्षमता एवं जीवन कौशल का मूल्यांकन किया जाता है। इसके अतिरिक्त शिक्षण प्रभाव का मूल्यांकन समसामयिक अध्ययन में अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए विभिन्न अनुसंधानों के द्वारा विद्यार्थियों में आन्तरिक मूल्य परिवर्तन का विश्लेषण करना अत्यन्त आवश्यक है। जिससे विशेष मानदण्ड जैसे नैतिक मूल्यों का संरक्षण और सामाजिक जिम्मेदारी का समावेश हो सके और छात्र–छात्राओं में सामाजिक मूल्यों का विकास किया जा सके।

(iv) परिणाम आधारित मूल्यांकन– परिणाम आधारित मूल्यांकन का उद्देश्य विद्यार्थियों की प्रगति का सूक्ष्म और वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करना होता है। यह शिक्षण के प्रभावों का मापन करता है। जिससे शिक्षण प्रक्रिया अत्यधिक

प्रभावशाली होती है। इसे विद्यार्थियों के नैतिक एवं सामाजिक गुणों और मान्यताओं के विकास के लिए मानदण्डों का उपयोग किया जाता है। जिसमें मूल्य आधारित व्यवहारों का अवलोकन, दस्तावेजीकरण तथा व्यक्तित्व विकास के तत्वों का विश्लेषण प्रमुख होता है। यह पारम्परिक परीक्षाओं की तुलना में व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है। जिसके द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों की आंतरिक मानवीय मूल्य का मूल्यांकन करता है। यह प्रक्रिया शिक्षक को मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता का आकलन करने की प्रेरणा प्रदान करती है और शिक्षण विधियों में आवश्यक संशोधन को भी उजागर करती है। जिससे छात्र–छात्राओं में सामाजिक मूल्यों का विकास किया जाना सम्भव होता है। शिक्षण प्रभाव का मूल्यांकन विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों एवं नैतिक आचरण में परिवर्तन का विश्लेषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शिक्षकों को शिक्षण के प्रभाव को मापने और उनके शिक्षण कौशल का मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान करता है। छात्र–छात्राओं के प्रभावी मूल्यांकन के लिए शैक्षिक परीक्षाएं, स्व–मूल्यांकन, सहपाठी समीक्षा, प्रोजेक्ट कार्य और आत्म परीक्षण जैसे विभिन्न मॉडलों का उपयोग किया जा सकता है। मूल्य शिक्षा के परिणाम स्वरूप जागरूकता, नैतिक आचरण का पालन और सामाजिक उत्तरदायित्व की अनुभूति का मूल्यांकन होना चाहिए। जिससे नैतिक निर्णय, सामाजिक व्यवहार और सामुदायिक सहभागिता का निरीक्षण किया जा सकता है। शिक्षण के प्रभाव का आकलन निरन्तर फीडबैक और समुदाय की प्रतिक्रियाओं के द्वारा भी किया जाना चाहिए। इसके द्वारा मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता और सुधार की आवश्यकता की जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रक्रिया के माध्यम छात्र–छात्राओं में सामाजिक मूल्यों को विकसित किया जा सकता है।

(v) शिक्षकों की भूमिका– विद्यार्थियों में मूल्य शिक्षा को विकसित करने में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक केवल ज्ञान का स्थानान्तरण ही नहीं करता है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और नैतिक मूल्यों का विकास करता है। शिक्षक अपने सैद्धांतिक और व्यवहारिक अनुभवों को अपने छात्र–छात्राओं में स्थानांतरित करता है। जिससे छात्र–छात्राओं में प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। एक कुशल शिक्षक नये शैक्षिक उपकरणों और शिक्षण विधियों के द्वारा छात्र–छात्राओं में सामाजिकता की भावना, नैतिकता एवं नेतृत्व क्षमता को विकसित करता है। जिससे विद्यालय में सहयोग एवं सद्भावना का संचार होता है। छात्र–छात्राओं में सामाजिक प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक सामाजिक मूल्यों के विकास के लिए निरन्तर प्रयत्नशील होता है।

(vi) शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका– छात्र–छात्राओं में मूल्य शिक्षा को विकसित करने में शैक्षणिक संस्थाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षण संस्थाओं को मूल्य शिक्षा के प्रति सकारात्मक और सक्रिय दृष्टिकोण अपना कर छात्र–छात्राओं में मूल्य शिक्षा को विकसित करना चाहिए। शिक्षण संस्थान छात्र–छात्राओं में नेतृत्व क्षमता एवं मूल्य आधारित शिक्षा के महत्व को समझाते हुए इसके प्रचार हेतु सशक्त नीतियों और योजनाएं बनाकर इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं। जिसमें शिक्षक की भूमिका भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वह एक आदर्श नागरिक के रूप में नैतिक मूल्यों का प्रभावी ढंग से प्रसार करने में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त शिक्षण संस्थान समुदायों के साथ सहभागिता के माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक और नैतिक गुणों का विकास कर सकते हैं। समाज के विविध आयामों को ध्यान में रखकर बहुसांस्कृतिक एवं समावेशी गतिविधियों का आयोजन मूल्य शिक्षा को छात्र–छात्राओं के व्यावहारिक मददगार सिद्ध होता है। डिजिटल एवं नवीन तकनीकी क्षमताओं का उपयोग करके एवं मूल्य निर्माण के लिए प्रेरणादायक एवं अभिनव शिक्षण विधियों को विकसित करके छात्र–छात्राओं में नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है। साथ ही

साथ नैतिक शिक्षा को स्थाई रूप से छात्र–छात्राओं के पाठ्यक्रम में लागू करना चाहिए तथा नैतिक मूल्यांकन प्रणालियों का निर्माण करके भी विद्यार्थियों में नैतिकता को विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार यह समग्र प्रयास मूल्य शिक्षा को व्यक्तिगत, सामाजिक, सामुदायिक और राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत एवं प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध होगा। इस प्रक्रिया में शैक्षिक नीति निर्माता और शैक्षणिक संस्थाओं का सहयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

(vii) नेतृत्व क्षमता का विकास– छात्र–छात्राओं में नेतृत्व क्षमता का विकास करके भी मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली को सफल बनाया जा सकता है। इस सम्बन्ध में शिक्षकों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योंकि शिक्षक विद्यालय में सकारात्मक वातावरण निर्मित करके छात्र–छात्राओं में नेतृत्व क्षमता का विकास कर सकतें है। नेतृत्व का उद्देश्य नैतिकता और आदर्श मान्यताओं का समर्थन करना है। जिससे छात्र–छात्राओं में प्रेरणा और कर्तव्यों के प्रति समर्पण का भाव बढ़ता है। नेतृत्व क्षमता स्पष्ट लक्ष्य, प्रयत्नशील वातावरण और मूल्य आधारित नीतियों का पालन सुनिश्चित करती है। जिससे छात्र–छात्राएं अधिक जागरूक और समाज के प्रति समर्पित होते हैं, इससे विद्यार्थियों में व्यावसायिक क्षमता और नेतृत्व कौशल का विकास होता है। छात्र–छात्राओं के सम्मुख आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करके उनमें नेतृत्व क्षमता और कुशलता को विकसित करके विद्यार्थियों में मूल्य का विकास किया जा सकता है।

(viii) सामुदायिक भागीदारी– सामुदायिक भागीदारी मूल्य शिक्षा को प्रभावी बनाने में शैक्षणिक संस्थाओं और समुदाय के बीच समन्वित साझेदारी को प्रदर्शित करता है। यह साझेदारी न केवल उसे क्षेत्र तक सीमित रहती है बल्कि समाज के विविध घटकों के सक्रिय भागीदारी के माध्यम से सम्मिलित करने पर बल देती है। इससे छात्रों में सामाजिक जागरूकता, नैतिक मूल्यों की समझ, सामाजिक जिम्मेदारी एवं उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। समुदाय की भागीदारी से शिक्षण प्रक्रिया में नैतिक मूल्यों का विकास, स्थिरता और प्रासंगिकता आती है। जो मूल्य शिक्षा को विद्यार्थियों के जीवन के साथ जोड़ने का कार्य करती है। इसके अन्तर्गत छात्र अपने परिवेश से जुड़े सदस्यों के साथ संवाद करते हैं। जो उनके व्यवहार नैतिकता और सामाजिक दृष्टिकोण को नवीन एवं विस्तृत आकार प्रदान करता है। इस सम्बन्ध में स्थानीय संगठन, स्वयंसेवी संस्थाओं, अभिभावक और सामाजिक नेता इस प्रक्रिया में सहायक सिद्ध होते हैं। ताकि मूल्य आधारित कार्यक्रमों को सामाजिक परिवेश में समन्वित किया जा सके। शिक्षण संस्थानों को चाहिए कि वह समुदाय की पहचान, संस्कृति और आवश्यकताओं का समावेश विद्यालय पाठ्यक्रम में करें। ताकि शिक्षण का प्रभाव स्थायी और परिवर्तनकारी सिद्ध हो सके। सामुदायिक भागीदारी से शिक्षकों की भूमिका भी विस्तृत हो जाती है। जिससे वह न केवल ज्ञान का प्रसार करते हैं, बल्कि मूल्य आधारित संवाद का मंच भी प्रदान करते हैं। यह प्रक्रिया सामाजिक व पारिवारिक सन्दर्भ में नैतिक मानदण्डों का समावेश करती है और छात्र–छात्राओं में सामाजिक समरसता, सहानुभूति, समर्पण और सहकारिता जैसे गुणों का विकास करती है। इस प्रकार समुदाय, पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के माध्यम से छात्र–छात्राओं में मूल्य शिक्षा को विकसित एवं संवर्धित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

8. शोध अध्ययन का परिणाम

छात्र–छात्राओं के पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा के समावेश के परिणाम स्वरुप सामाजिक और व्यक्तिगत स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। इससे छात्र छात्राओं एवं युवाओं में नैतिक मूल्य का विकास होता है। जो उनके आदर्श व्यक्तित्व का आधार बनता है। मूल्य शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में सहानुभूति, ईमानदारी, समाज के प्रति जिम्मेदारी, सामाजिक सम्मान, सामाजिक समरसता, सहयोग की भावना, परोपकार आदि की भावना विकसित होता है। जो विद्यार्थियों के सामाजिक तनाव और सामाजिक विचलनों को कम करने में सहायक होता है। इस प्रकार शिक्षण प्रक्रिया में मूल्य शिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों में जागरूकता एवं नैतिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है। जो उनके भविष्य में नैतिक संकटों का सामना करने में सहायक सिद्ध होती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मूल्य शिक्षा को विद्यालय पाठ्यक्रम में सम्मिलित करके छात्र–छात्राओं को राष्ट्र का आदर्श नागरिक बनाया जा सकता है। इस सम्बन्ध में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। क्योंकि उसके कुशल शिक्षक और नेतृत्व क्षमता के द्वारा विद्यार्थियों में नैतिक एवं मूल्य आधारित गुणों का विकास तीव्र गति से किया जा सकता है।

9. मूल्य शिक्षा के समक्ष चुनौतियां

विद्यालय पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा को सम्मिलित करने से छात्र–छात्राओं में सकारात्मक गुणों का विकास होता है। लेकिन फिर भी इसके समक्ष अनेक चुनौतियां विद्यमान है। इसके मुख्य बॉधाओं में पारंपरिक शिक्षा प्रणाली की जड़ता, परीक्षा केंद्रित दृष्टिकोण और मूल्य शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण शामिल है। इसके अतिरिक्त डिजिटल युग में तेजी से बढ़ रहे तकनीकी के प्रभाव से सामाजिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है। तकनीकी विकास के फलस्वरुप लोग ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की ओर अग्रसर हो रहे हैं। जो छात्र–छात्राओं में केवल व्यक्तिगत गुणों का एकांकी विकास करता है। जिससे सामाजिक पक्ष अधूरा रह जाता है। जो सामाजिक गुणों जैसे सहयोग, परोपकार, सामाजिक जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व की भावना एवं नेतृत्व क्षमता को कमजोर कर देता है। अतः यह आवश्यक है कि ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के साथ–साथ ऑफलाइन क्लास आधारित शिक्षा को प्रमुखता दिया जाना चाहिए। जिससे छात्र–छात्राएं विभिन्न सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के साथ एक साथ बैठकर शिक्षा ग्रहण कर सकें और उनमें विविधता में एकता तथा सहयोग, परोपकार और सौहार्द की भावना विकसित हो सके।

10. शोध अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली की विभिन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए यह आवश्यक है कि नीति निर्माताओं के द्वारा इस दिशा में सकारात्मक प्रयास किया जाए। विभिन्न शिक्षकों, शिक्षाविदों एवं नीति निर्माता को इस दिशा में प्रयास करना चाहिए। जिससे मूल्य शिक्षा को प्रभावी रूप से छात्र–छात्राओं के सामाजिक परिवेश और आधुनिक तकनीक के साथ समन्वित किया जा सके। इस दिशा में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। क्योंकि शिक्षक न केवल व्यक्तिगत नैतिकता का आदर्श प्रस्तुत करता है, बल्कि कक्षा शिक्षण के माध्यम से नैतिक मूल्य का सम्यक विस्तार करता है। वह अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता और सतत व्यवसायिक विकास के माध्यम से अपने शिक्षण कौशल को परिष्कृत करता है तथा विद्यार्थियों में सामाजिक और भावनात्मक विकास को निर्धारित करता है।

जिससे मूल्य शिक्षा का प्रभाव अधिक स्थाई और व्यापक बनता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि नीति निर्माताओं को इस प्रकार की नीति निर्मित करनी चाहिए, जिससे संस्थागत नेतृत्व और समुदाय की भागीदारी को सुनिश्चित किया जा सके। क्योंकि इनके सहयोग से शिक्षक छात्र–छात्राओं में मूल्य शिक्षा के प्रभाव को अधिक स्थाई और व्यापक बनाने में सफल सिद्ध होगा। इससे न केवल व्यक्तिगत नैतिकता का विकास होगा, बल्कि सामाजिक जीवन में स्थिरता, सद्भावना, सहयोग और परोपकार की भावना का भी विकास सुनिश्चित होगा।

11. निष्कर्ष

वर्तमान शैक्षणिक और सामाजिक सन्दर्भ में मूल्य शिक्षा की प्रासंगिकता निरन्तर बढ़ रही है। यह न केवल छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि समाज के समग्रता के लिए भी अनिवार्य है। इस सम्बन्ध में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। क्योंकि वह मूल्य शिक्षण के माध्यम से छात्र–छात्राओं में नैतिक जागरूकता एवं नैतिकता का प्रसार करते हैं। अतः प्रभावी मूल्य शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों और मूल्यांकन पद्धतियों को समेकित और सुव्यवस्थित किया जाना चाहिए। साथ ही साथ शिक्षकों का व्यवसायिक विकास, उनकी प्रतिबद्धता और नेतृत्व क्षमता इस दिशा में आधारभूत स्तम्भ के रूप में कार्य करते हैं। इस सम्बन्ध में समुदाय और परिवार की सहभागिता से मूल्य शिक्षा को अधिक प्रभावी एवं स्थाई बनाया जा सकता है। वर्तमान समय में डिजिटल प्लेटफॉर्म और तकनीकी संसाधनों का समुचित उपयोग मूल्य संवेदनाओं के विकास में नवीन संभावनाएं प्रस्तुत करता है। जो सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता के मध्य समरसता को बढ़ाने में सहायक होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मूल्य शिक्षा का समाज में स्थायी एवं दीर्घकालिक प्रभाव तभी सम्भव है, जब शिक्षक अपनी भूमिका को पूर्ण प्रतिबद्धता एवं जिम्मेदारी के साथ निर्वहन करें। विद्यार्थियों में मूल्यों को विकसित करने के लिए निदानात्मक रणनीतियों एवं नवीनतम तकनीकों का समुचित उपयोग करें। इस प्रक्रिया में निरन्तर अनुसंधान और परिसंवाद भी आवश्यक हैं। ताकि मूल्य शिक्षण के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हो सके और समाज में नैतिक मूल्यों का अक्षय संचार सुनिश्चित किया जा सके।

12. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- मूल्य शिक्षा एवं नैतिक विकास (2023) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
- तिवारी, एस. एवं यादव, ए. (2023) शिक्षक और मूल्य आधारित शिक्षण रणनीतियों शिक्षा संवाद, 18 (3), 45-58।
- मेहता, आर. (2023) मूल्यांकन और शिक्षक प्रभाव का अध्ययन, शैक्षिक मूल्यांकन समीक्षा, 8 (1), 24-39।
- पाण्डेय, के. एवं अग्रवाल एन. (2023) महामारी काल में सामाजिक भावनात्मक शिक्षा का महत्व, शिक्षा और समाज, 15 (2) 90-104 ।
- शर्मा, आर. और वर्मा, पी. (2022) समकालीन शिक्षा में मूल्य शिक्षा की भूमिका, भारतीय शिक्षा समीक्षा, 14(2) 45-58।
- उच्च शिक्षा में मानव मूल्य और नैतिकता (2022) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली।
- चौधरी, वी. (2022) शिक्षक की भूमिका और नैतिक नेतृत्व, भारतीय शिक्षक शिक्षा पत्रिका, 13(1), 51-63।
- मूल्य शिक्षा और शिक्षक विकास (2022) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- राय, टी. एवं सक्सेना, एल. (2022) नैतिक शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व, भारतीय समाज एवं शिक्षा पत्रिका 12 (4) 66-79 ।

- भारतीय सन्दर्भ में मूल्य शिक्षा (2022) महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा।
- सिंह, एम. (2021) डिजिटल युग में नैतिक मूल्यों का विकास, आधुनिक शिक्षा पत्रिका, 9(1), 33-47।
- यूनेस्को (2021) अपने भविष्य की मिलकर नई कल्पना करना, शिक्षा के लिए एक नया सामाजिक अनुबन्ध , पेरिस यूनेस्को।
- जोशी, एल. एवं गुप्ता, आर. (2021) सांस्कृतिक विविधता और मूल्य शिक्षा, समकालीन शिक्षा अध्ययन 7(2), 28-40।
- भटनागर, एस. (2021) डिजिटल नैतिकता और युवा पीढ़ी, ज्ञानोदय शिक्षा समीक्षा पत्रिका, 6(3), 37-49।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (2021) समावेशी शिक्षा एवं नैतिक मूल्य, नोएडा, उत्तर प्रदेश
- त्रिपाठी, ए. (2021) समुदाय आधारित सहभागिता और मूल्य शिक्षा, समाज एवं संस्कृति पत्रिका, 5(3), 70-83।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) भारत सरकार, नई दिल्ली
- मिश्रा, डी. (2020) सामाजिक भावनात्मक शिक्षा और विद्यालय परिवेश, शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 11(4), 81-95 ।
- केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, (2020) विद्यालय शिक्षा में जीवन कौशल एवं मूल्य शिक्षा, नई दिल्ली
- शुक्ला, पी. (2020) मूल्य आधारित पाठ्यक्रम संयोजन का अध्ययन, आधुनिक शिक्षाशास्त्र पत्रिका, 10(2), 44-57 ।

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.